खुदा मुझ पर फिदा

✻ ब्रह्माकुमारी लाज, सन्त नगर, दिल्ली

मेरा जन्म सन् 1952 में दिल्ली में एक धार्मिक परिवार में हुआ। बचपन से ही पाठ-पूजा, भक्ति में तल्लीनता थी। ढाई वर्ष की उम्र से कथा करने और प्रसाद बांटकर खाने की भावना थी। चार वर्ष की आयु से उपवास रखना प्रारंभ कर दिया था। भक्ति-लीला के खेल ही बचपन से खेलती थी।

ज्ञान का जन्म

मुझे मेरी मौसी ने गोद लिया था। उन दिनों साकार बाबा दिल्ली में आये हुए थे। मेरे पड़ोस में एक माता कमलानगर, दिल्ली में ब्रह्माकुमारीज़ की नियमित विद्यार्थी थी। उसने मेरी मम्मी और मौसी दोनों को बाबा से मिलने का निमन्त्रण दिया परन्तु मेरी भक्ति की निष्ठा देख कर डर के मारे कि कहीं यह भी वहाँ ना चली जाए उन्होंने निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। अगले दिन उस पड़ोसन ने मुझे ज्ञान के ढाई अक्षर 'मैं आत्मा हूँ.... मूलवतन से आई हूँ.... मूलवतन जाना है' सुनाये। मेरे लिए वही ढाई अक्षर पंडित बनाने वाले सिद्ध हुए।

धारणाओं की शुरूआत

जिस समय मालूम पड़ा कि प्याज-लहसुन का प्रयोग सात्विक भोजन में नहीं होना चाहिए तो मैंने भी इनका सेवन करना छोड़ दिया। माँ ने खूब पिटाई की, फिर मैंने खा लिए परन्तु पिट कर रोते-रोते सो गई। रात को स्वप्न में मम्मा-बाबा आये। यह सन् 1966 की बात है तब मम्मा अव्यक्त हो चुकी थी। बाबा ने कहा, बच्ची तू हार गई? मैंने कहा, नहीं बाबा, आप साथ हो तो हार कैसे हो सकती है और फिर नियमों की धारणा पूर्ण रीति से शुरू हो गई।

छिप-छिप किया मिलन

ज्ञान प्राप्त होने के बाद सात वर्षों तक घरवालों से छिप-छिप कर नियमित सेवाकेन्द्र जाती रही। मुझे ज्ञान सुनने जाने की तड़प ऐसी उठती थी जैसे जल के लिए मछली तड़पती है। जब सेवाकेन्द्र पर गुलजार दादी जी और चक्रधारी दीदी जी कहती थी कि यह समय बहनों के आराम का होता है तब जगदीश भाई साहब मुझे समय देते थे।

एक नज़र में जीवन का निर्णय

पहली बार जब गुलजार दादी जी को देखा तो मन ही मन निर्णय कर लिया कि जीवन जीना है तो इसी तरह जीना है। माता-पिता ने सिर्फ आठवीं

कक्षा तक पढ़ाया। कहते थे, ज्यादा पढ़-लिखकर पांव पर खड़ी हो जाएगी तो हमारा कहना नहीं मानेगी। फिर भी मैंने सिलाई का डिप्लोमा प्राप्त किया।

अज्ञात-वास पूरा हुआ

मैं सिन्धी परिवार से हूँ इसलिए गुरुद्वारे में जाना होता था। एक दिन मैंने सफेद कपड़े पर पीली और लाल पैंसिल ले कर (बाबा का) चित्र बनाया परन्तु मम्मी ने पीली पैंसिल छिपा दी तो मैंने हल्दी की सहायता ली और उस चित्र को पूरा कर ट्रंक में संभाल कर रख दिया। जब माँ की नज़र उस पर पड़ी तो सज़ा मिली।

एक दिन मन में आया, आखिर छिप-छिप कर सेवाकेन्द्र कब तक जाती रहूँगी? एक सुबह सेन्टर जाने लगी तो माँ ने पूछा, कहाँ जा रही हो? ज़ोर से मेरी आवाज़ निकली,

सेवाकेन्द्र जा रही हूँ। वापस घर आई तो माँ ने कुछ भी नहीं कहा। उस दिन से रोज़ घर पर बता कर सेवाकेन्द्र जाने लगी।

सेवा करनी है चाहे कैसे भी हो

इसी बीच शादी का बंधन आया परन्तु भगवान से लगी लगन की अग्नि ने मुझे भगवान का बनाये रखा। मामा जी ने कहा, खुद कमाओ, खुद खाओ। मैंने कहा, मंजूर है। सन् 1973 में मधुबन जाने का समय आया, वहाँ बाबा से मिले। बाबा को बंधन के बारे में सुनाया और कहा, बाबा, सुबह क्लास करने तो जाती हूँ परन्तु दुबारा सेवा करने नहीं आ पाती क्योंकि रोका जाता है। बाबा ने बहुत स्नेह दिया और कहा, सेवा करनी है चाहे कैसे भी हो। मधुबन से आई तो सेवाकेन्द्र पर सुबह-सुबह सेवा करने लगी। साथ-साथ एक्सपोर्ट फैक्टरी में नौकरी भी करने लगी। बचपन से शरीर कमज़ोर था, बीमारी कोई ना कोई लगी रहती थी। मैं दीदी और भाई साहब से कहती थी कि मुझे सेवाकेन्द्र पर रख लो। दीदी ने बाबा से बात की। मैंने बाबा से पूछा, मैं बीमार रहती हूँ तो क्या सेवाकेन्द्र पर नहीं रह सकती? बाबा ने दीदी को कहा, बच्ची का ध्यान रखना। ये शब्द तीन बार बाबा ने कहे। मुझे नाज़ है कि मेरे जीवन का समर्पण स्वयं भगवान के वरदानी बोल के द्वारा हुआ। इस प्रकार जीवन-यात्रा में मैंने जो संकल्प किए, बाबा ने एक सच्चे जीवन-साथी के रूप में उन्हें पूरा किया। इन अनुभवों को पाकर मेरा दिल यही कहता है – खुदा मुझ पर फिदा। मुज्जफरनगर में 10 वर्ष सेवाएँ की। पुन: दिल्ली आना हुआ। वर्तमान समय दिल्ली, सन्त नगर में ईश्वरीय सेवाएँ दे रही हूँ।

❖

नारी का सम्मान

ब्र.कु.हरी सिंह, राजौरी गार्डन, दिल्ली

नारी ने तुम्हें जन्म दिया, नारी संग ऊँचा नाता है,
बेटी, पत्नी, बहना और नारी ही तुम्हारी माता है।
धुरी कुटुम्ब की नारी है, नारी से हो कल्याण,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

पराक्रमी योद्धाओं को भी माता ने ही ज्ञान दिया,
सन्तों और महन्तों को भी उसने आत्म-ज्ञान दिया।
भारत का इतिहास पढ़ो, मिल जायेंगे सब प्रमाण,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

शंकर से पहले गौरी, कृष्ण से पहले राधा है,
नारायण से पहले लक्ष्मी, राम से पहले सीता है।
देवों से पहले होता है देवियों का आह्वान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

ज्ञान की देवी सरस्वती, तो धन की लक्ष्मी देवी है,
काली करे काल से रक्षा, शक्ति की दुर्गा देवी है।
शिव की इन सब शक्तियों को ध्यान से लो पहचान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

ईश्वरीय परिवार हमारा प्रशासिका इसकी नारी है,
पिच्चासी सौ सेवाकेन्द्रों की दादी ही प्रभारी है।
बाँट रही ब्रह्माकुमारियाँ सच्चा गीता-ज्ञान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

कान खोलकर सुन ले मानव, नारी को जो सताएगा,
जीते जी दुख पाएगा और अन्त दुर्गति पाएगा।
वस्तु नहीं है नारी कोई, ना ही कोई सामान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।

शान्ति दूत हम भाई-बहनें तुम्हें जगाने आये हैं,
परमपिता आ गए धरा पर, ज्ञान सुनाने आये हैं।
नारी बिना बन नहीं सकेगा भारत स्वर्ग समान,
नारी का सम्मान करो भाई, नारी का सम्मान।।